RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 1 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 12 जून 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

गीता उप्रेती

इस अंक के साथ 'पिघलता हिमालय' अपनी स्थापना के 45 वर्ष पूर्ण 46 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इतनी लम्बी दूरी तय करना आसान नहीं है। ऐसी दूरियां संकल्प होने पर ही पूरी की जा सकती हैं। ऐसे समय में जब हर क्षण होने वाली घटनाओं के साथ अफवाहों का बवंडर चारों ओर फैला हुआ है। पत्रकारिता की आड़ में गिरोहबाजियाँ देखने को मिल रही हों, मिशन की पत्रकारिता पर सोचना भी कठिन है। लेकिन 'पिघलता हिमालय का संकल्प ही है कि एक लम्बी दूरी तय हुई है। इन वर्षों में अपने हिमालय, अपने समाज, इतिहास, भूगोल, कला संस्कृति पर जितना लिखा गया है वह एक दस्तावेज है।

1978 में स्थापित 'पिघलता हिमालय' ने संकल्प लिया था कि वह हिमालय की आवाज बनकर अपने मिशन पर चलेगा। स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया-स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती और उसके बाद स्व.कमला उप्रेती ने जिस भाव से हर विपरीत परिस्थितियों में इसे नियमित बनाये रखा वह उनका विचार- युद्ध भी था। किसी से समझौता किये बगैर अपनी धारा में बने रहना बहुत कठिन होता है लेकिन उनकी बात और व्यवहार था ही ऐसा, वह गलत को गलत कहने में डरने वाले नहीं थे। आज की चाटुकार पत्रकारिता में पत्र और पत्रकार बेईमान बनते जा रहे हैं। समाचार पत्रों की विश्वसनीयता पर सवाल उठाये जाने लगे हैं। प्रिंट मीडिया को इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया से भिड़ना सा पड़ रहा है। पत्रकार होने का दम्भ भरने वाले सही को भी डरा रहे हैं। अपने आडम्बर के लिये सही-गलत की पहचान नहीं कर पा रहे हैं। हर पल की खबरों का ऐलान करते कई पत्रकार चौराहों पर खड़े हैं। कारोबारी, कामकाजी, अधिकारी-कर्मचारी, नेतागण सब सहमे हैं कि कौन किस रूप में ब्लैकमेलिंग करने लगे। मोबाइल फोन उठाये कौन राह चलते वीडियो बनाने लगे। आम जनता कैसे तय कर सकती है कि कौन पत्रकार है और कौन ब्लैकमेलर? इन स्थितियों में सुरक्षित सिर्फ वह हैं जो सबको पुचकारने और मीडिया को खरीद कर अपनी जेब में रखते हैं।

यही कारण है कि मीडिया के तमाम संस्करण बिके हुए से दिखाई दे रहे हैं। सच कहने में उनका दम सा निकलने लगा है। वह विज्ञापन परोसने वाली सरकारों व उद्योगों का गुणगान करते हैं। उनके आयोजनों को प्रायोजित करने वाले व्यापारियों को समाजसेवी और उनके लिये गाने वालों को संस्कृति कर्मी का खिताब दे रहे हैं। ऐसा नहीं है कि आम जनता इन सब बातों से अनभिज्ञ है लेकिन लगता है देश में अभी जनक्रान्ति आने में समय है।

पत्रकारिता के सामने चुनौती कभी कम होने वाली नहीं है लेकिन जिस कायदे के लिये पत्रकारिता से आश की जाती है उसे को बनाये रखना होगा। यह समाज का दर्पण है और किसी भी समाचार पत्र की व्यवस्था को हथौड़े ठोक कर ठीक नहीं किया जा सकता है। जब सौदेबाजी की पत्रकारिता में माफिया, चोर संलग्न होने लगे हैं, तब आम जनता और बुद्धिजीवियों ने भी तय कर लेना चाहिये कि वह मिशन की पत्रकारिता से जुड़ें और उसे समर्थन दें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पुरोला की घटना नई बात नहीं

उत्तरकाशी के पुरोला नगर में नाबालिक को भगाकर ले जाने की कोशिश के बाद से भारी तनाव है। समुदाय विशेष के दो युवा जब बालिका को ले जा रहे थे, जनता ने पकड़ लिया। पकड़े गये युवा रजाई गद्दे का काम करते हैं। इसके बाद समुदाय विशेष और बाहारी व्यापारियों के खिफाल पूरे इलाके में आक्रोश फैल गया और बाजार बन्द करवा दिया गया।

पुरोला में बालिका को बहलाने जैसी घटना नई बात नहीं है। अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार के मामले देखने को मिलते हैं। असल में घटना के बाद इन बातों को अपने-अपने तरीके से कहा सुना जाता है जबकि ऐसी स्थिति क्यों हो रही है? इस पर पर कोई विचार नहीं कर रहा है।

बहुत सीधी सी बात है कि लोभ-लालच में जाने-पहचाने बिना दुकान मकान किराये पर दिये जा रहे हैं। पहले से लोग डरते थे कि शराब भट्टी वाला उनका किरायेदार न हो, शराब भट्टी किराये पर न हो, अनजान कबाड़ वाला या अन्य परदेशी किराये पर न हो। पिछले एक दशक में हाल यह हो चुका है कि हर प्रकार के लोग गली-गली घुस चुके हैं। जिन मोहल्लों में शान्ति थी, शहर के वह मोहल्ले भी भयभीत हो चुके हैं। पहाड़ की शान्त वादियों में तक बाहर से आने वालों ने कब्जा कर रखा है। जब बाहर से लोग आ चुके हैं और आ रहे हैं तो निश्चित ही उनके परिवार और मिलने वालों का क्रम बना रहेगा। जिससे पूरे वातावरण में वह सब असर होना ही है जो सोचा भी नहीं था। इन सबके अलावा वर्तमान दौर में बच्चों के मोबाइल खेल ने जितनी 'बिगड़त' की है, वो डरावनी है। समय से पहले जवान होते बच्चे किसी की कुछ सुनने को राजी नहीं हैं। सयानों तक जब बात पहुँचती है तब तक बहुत कुछ बात बिगड़ चुकी होती है।

पुरोला से पहले भी कई घटनाएं हुई हैं। अंकिता हत्याकाण्ड के घाव अभी हरे हैं। न्याय के लिये कई मामले उलझे हुए हैं। ऐसे में पुरोला की घटना नई तो नहीं है लेकिन जाति विशेष के बालकों द्वारा नाबालिक को बहलाने से यह घटना और भी ज्यादा भड़क चुकी है। इस घटना ने यह तो सन्देश दे ही दिया है कि समाज में असुरक्षा ज्यादा है। इसके लिये जिम्मेदार हम सब लोग भी हैं जो लोभ-लालच में अपनी घर-दुकान-जमीन अनजानों के हवाले कर रहे हैं और अपने बच्चों को इतनी छूट दे रखी है कि वह जिद्दी हो चुके हैं या किसी के बहकावे में आ जाते हैं। इसलिये पुरोला की घटना से सावधान हो जाना चाहिये। अपने बच्चों की सुरक्षा के लिये उन्हें संस्कार देने के साथ ही अपनी ओर से भी कोई चूक न होने पाए।

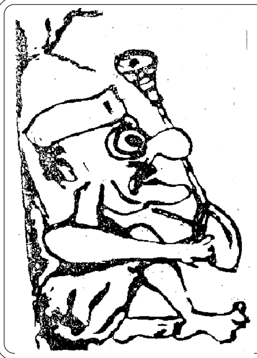

फसक

दाज्यू, तंत्र-मंत्र तो हर युग में होने वाला ठैरा

अपनों के सताए पूरी तरह मुक्त होकर नाचते हैं बल

दाज्यू, नए संसद भवन के उद्घाट के बाद से पूरे देश में बात-बहस चल रही है। मोदी ज्यू कर रहे हैं- 'यह नए भारत की आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब है।' दाज्यू, लोकतन्त्र में सब बोलने ही वाले ठैरे किसी का बुरा मत मानो। जनतन्त्र हो या राजतन्त्र......तन्त्र-मन्त्र तो हर युग में होने वाला ठैरा। आटा-सब्जी महंगा हो गया तो क्या हुआ, अपनों के के सताए पूरी तरह मुक्त होकर नाचते हैं बल। अभिनेता अक्षय कुमार शान्ति के लिये जागेश्वर पहुँचे।

नए संसद भवन के बाद अब सुनाई दे रहा है कि देश में संसदीय क्षेत्र छोटे होंगे। इससे डेढ़ सौ नई सीटें बढ़ने की उम्मीद है। दाज्यू, ऐसा हो जाता तो अपना लपलू दा भी सांसद बन ही जाता। उसकी बड़ी इच्छा है............। दो बार प्रधान का चुनाव हारने के बाद वह सीधे सांसद बनने की तैयारी में है। चम्पावत में जिला आबकारी अधिकारी से 5 लाख की रंगदारी मांगी गई बल। अब जाँच-पड़ताल हो रही है। टनकपुर में एपीजे अब्दुल कलाम इंजीनियरिंग कालेज में निदेशक और कर्मियों के बीच विवाद नहीं सुलझ रहा है। दाज्यू, डायरेक्टर तो साब होने वाला ठैरा और कार्मिक स्थानीय हुए......आज समझ ही रहे होंगे.........वैसे भी इंजीनियरिंग कालेज का हाल फुरफुराट बन हुआ है।

सीएम धामी ने फिर से कह दिया है- 'लोकसभा की पाँचों सीट रिकार्ड मतों से भाजपा जीतेगी।' दाज्यू, रिकार्डतोड़ खेल पूरे प्रदेश में चल रहा है। हिन्दू वाहिनी का मुन्ना हनुमान का नारा लगाते हुए घूम रहा है। चुटान-सुतान-कुटान भी दाएं-बाएं होने वाला हुआ। गुन्तरोग इलाज का दावा करने वाले टैन्ट लगाए बैठे हैं। बौबी कह रहा है- 'कलयुग में कथा सुननी चाहिये।' दाज्यू, हम भी भागवत कथा सुनने के लिये जाने की तैयारी कर चुके हैं। कथावाचक शास्त्री जी अपने चेलों के साथ आने वाले हैं बल।

दाज्यू, पार्टियां चुनाव मोड में आ चुकी है। नेताओं का मूड भी निकाय चुनाव की ओर है। सीएम सैप कह रहे हैं- 'भाजपा हर समय चुनाव को तैयार रहती है।' कांग्रेस, बसपा, यूकेडी, आप भी तैयार हो चुके हैं। पहलवानों के आन्दोलन की ताप दूर-दूर तक है। ब्रज भूषण भी भयंकर ठैरा महाराज। सारी खाप तराना छेड़ चुकी लेकिन माई का लाल छल कब्बडी को तैयार है। पता नहीं आगे क्या-क्या होगा? दाज्यू, प्रदेश में अतिक्रमण वाला मामला भी तो बौछार कर रहा है। तराई में पूर्व मंत्री तिलकराज गुस्से में हैं और ऐलान कर दिया है कि उनके इलाके में कोई अतिक्रमण नहीं हटाने देंगे। दाज्यू, तिलकराज उत्तराखण्ड राज्य के विरोध में पहले से थे। तभी तो कह रहे हैं- 'छोटा प्रदेश बन गया है तो इसका मतलब यह है कि सबको खदेड़ देंगे। बड़े राज्यों में अतिक्रमण हटाने का ऐसा काम होता तो जनता बता देती।' दाज्यू, किसके लिये क्या कहें? जब-जब जड़ी-बूटी खाने की बात आती है ये नेता लोग चरने लगते हैं और अपने मतलब के लिये छोटा राज्य-बड़ा राज्य, पहाड़-मैदान करने लगते हैं। सबके अपने मंत्र हैं और अपना तंत्र है।

दाज्यू, जून का महीना झुलसा रहा है। स्थानान्तरण भी होने वाले हैं। कुछ जुगाड़ में हैं कुछ इन्तजार में। सरकारी दामाद बनकर दिन काटने वालों के पास फार्मूले भी होने वाले ठैरे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

उत्तराखण्ड में पत्र-पत्रकार

मीडिया घरानों को संरक्षण देना चाहिये

डॉ.पंकज उप्रेती

23 साल का उत्तराखण्ड सवालों के बण्डलों से भर चुका है, कारण इस पर्वतीय राज्य में अभी विकास की छटपटाहट है। प्रदेश के सभी जिलों के हर कौने से आवाज आ रही है कि सड़क, बिजली, पानी, संचार, अस्पताल, शिक्षा, रोजगार के साधन उपलब्धा हों। यही सब कारण भी थे कि पृथक पर्वतीय राज्य की मांग उठी और 9 नवम्बर 2000 को उत्तराखण्ड बना। इन 23 सालों में सरकारों का आना-जाना रहा है विकास के रास्ते कभी धीमे तो कभी तेज सरकते हुए बन ही रहे हैं।

विकास की सीढ़ी चलने के लिये सरकार का निर्णय महत्वपूर्ण है लेकिन इससे भी ज्यादा जरूरत मीडिया की है जो अपने देश-प्रदेश को संवारने के लिये दिशा और दशा दे। सरकार कोई जादू का पिटाना नहीं जो एकदम निर्णय लेकर कायाकल्प कर डाले, इसके लिये नेक सलाहकार और स्वच्छ पत्रकारिता बड़े कारगर होते हैं। जिन कठिनाईयों को उत्तराखण्ड जी रहा है उसे सरल बनाने के लिये सरकार क्या कर सकती है, इसे रास्ता दिखाना मीडिया का काम है। उत्तराखण्ड भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक दृष्टि से भारतवर्ष की ऐसी इकाई है जिसे सदियों से तप के लिये, साधना के लिये, वीरता के लिये, सरलता के लिये, परम्पराओं के लिये जाना जाता है। यही कारण है कि देश में जब भी बाहरी आक्रमण हुए हिमालय की गोद में बसा उत्तराखण्ड अपने बूते लड़ा। यहाँ की राजशही परम्पराओं ने भी अपने मानकों को जाना और आतताईयों पर कठोर हुए। ढाई सौ से ज्यादा गाथाएं इस पहाड़ी राज्य की लोक परम्पराओं की गवाह हैं। जियारानी जैसी रानी यहाँ हुई है जिसने दुश्मनों से मुकाबला किया। रुहेलों के से तराई को मुक्त कराने के लिये रुद्रचन्द ने अपना रथ घुमाया था। वीरता से भरे उत्तराखण्ड के इतिहास में सैन्य परम्परा हमेशा से है। कुमाऊँ रेजीमेंट, गढ़वाल राइफल्स सहित देश की सैनिक टुकड़ियों में इस पहाड़ के वीर भरे हुए हैं। उच्च पदों की कमान इनके हाथ रही है। विज्ञान हो या कला पहाड़ का नेतृत्व हमेशा चमकता रहा है। इसे धार देने का काम पीछे से मीडिया ही करता रहा।

स्वतंत्रता आन्दोलन की बात करें तो पहाड़ की पत्रकारिता ने अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ आग उगली और पत्रकारों ने सजा भी भोगी। देश आजाद होने के बार मिशन की पत्रकारिता करने वाले पत्रकार अपने को कष्ट देकर भी समाचार पत्र चलाते रहे हैं। साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्र पत्रिकाओं की ऐसी धारा आज भी प्रदेश में जारी है। समाज को दिशा-दशा देने के लिये महत्वपूर्ण इन मीडिया घरानों को वर्तमान की आंधी में झुलसना पड़ा है। फिर भी समाज को इनसे उजली आस है। यही कारण है कि आधुनिक चकाचौंध के बावजूद अपने कम संसाधनों में भी यह पत्र-पत्रिकाएं हस्तक्षेप करने की ताकत रखते हैं। दिखावे इस वर्तमान समय में सरकारों को भी चाहिये कि सच का रास्ता दिखाने वाले परम्परागत मीडिया घरानों को संरक्षण दे। ऐसे समय में जब हर सेकेन्ड का समाचार परोसने की होड़-हड़कम्प- हड़बड़ाहट मची है। क्षण भर में एक कौने से दूसरे कौने तक सूचनाएं पहुँचाना आसान है। बड़े मीडिया घरानों की जकड़न में घिरे पहाड़ को सूचना कम विज्ञापन ज्यादा परोसे जा रहे हैं। हमारी कला-संस्कृति के विकृत स्वरूप को हवा दी जा रही है, बेकाबू युवाओं को उनके कुटीर उद्योग धन्धों से दूर किया जा रहा है, पलायन की मार से गाँव सूने हो रहे हैं, मेले-उत्सवों की उमंग महोत्सवों के नाम पर गिरोहों से घिरने लगी है। मीडिया की बड़ी जिम्मेदारी है कि वह अपने समाज को उसकी जड़ों से जुड़े रहने के लिये प्रेरित करती रहे और परोसे जा रहे अपसंस्कृति पर चोट करे। क्या मीडिया ऐसा कर सकता है? इस दौर में जब संसाधनों की भरमार है, प्रतिस्पर्द्धा और दिखावा ज्यादा हो रहा है- मीडिया बिना अर्थ के कैसे आगे बढ़ सकता है। यही कारण है कि बड़े मीडिया घरानों की आवाज के सामने बहुत कुछ झुक जा रहा है। मुख पृष्ठ से ही विज्ञापन ओढ़ने वाला मीडिया वही परोसेगा जो उसे कहा जायेगा। परोसने की इस परम्परा में पैड समाचार का चलन बढ़ता जा रहा है। पत्रकारिता के लिये अनुभवी और पढ़ाने-समझाने वाले घिसे-पिटे लोगों से ज्यादा जरूरत उनकी मानी जा रही है जो दौड़धूप कर विज्ञापन बटोर सकें। ऐसे में मिशन की पत्रकारिता बड़ी चुनौती है। संसाधन के बिना या कम संसाधान पर मीडिया घराने क्या कर लेंगे? अब सवाल उठता है कि देवभूमि उत्तराखण्ड में मीडिया केवल मण्डी बन जाएगा? नहीं.........यह नहीं हो सकता। अपनी परम्पराओं के वाहक कभी भी ऐसा समझौता नहीं कर सकते हैं। जिन्होंने अपने समाज, अपनी संस्कृति, अपने इतिहास भूगोल से प्यार किया है वह किसी भी हालत पर झुक नहीं सकेंगे। ऐसे लोगों की जिद के कारण ही पत्रकारिता का मान भी बना हुआ है। इस सत्य को कोई नहीं झुठला सकता कि हमारी लोक परम्परा अपनी गति से चलती रहती है, जबकि तत्काल लाभ के लिये जिस प्रकार का झूठ सुविधा का सहारा लिया जाने लगा है वह समाज के लिये घातक है। इसलिये जरूरी हो जाता है कि हमारी सरकार मीडिया घरानों को संरक्षण दे।

मीडिया घरानों की श्रेणी को जाँचा जाए जो नियमित रूप से अपने समाज की उन्नति के लिये सकारात्मक बने हुए हैं। वर्तमान सरकार से यह उम्मीद ज्यादा है क्योंकि जिस प्रकार से वह इस पर्वतीय राज्य की परम्पराओं के लिये ताना-बाना बुन रही है और विभिन्न क्षेत्रों में यहाँ के निपुण जनों को प्रोत्साहित कर रही है उसे देख लगता है कि पहाड़ के मीडिया घरानों के उत्थान के लिये कोई नीति बनेगी। छोटे एवं मझले समाचार पत्रों के भविष्य के लिये प्रोत्साहन राशि का सहारा भी मिलेगा। यह सब इसलिये भी करना चाहिये क्योंकि सही सलाहकार की भूमिका पहाड़ के यह पत्र-पत्रिका करते रहे हैं। साथ ही शासन प्रशासन के तालमेल से समाज को वह लाभ मिलेगा जिसके लिये पृथक राज्य की लड़ाई थी और राज्य की अवधारणा पूरी होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जानकारी

प्राकृतिक संसाधनों पर जनता के हक की लड़ाई तिलाड़ी काण्ड

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

क्या हैं जंगल के उपकार, मिट्टी,
पानी और बयार।
मिट्टी, पानी और बयार,
जिन्दा रहने के आधार।

तिलाड़ी काण्ड एक माह या एक साल में उपजा आन्दोलन नहीं था। ब्रिटिश सरकार ने वनो के अनियमित दोहन को रोकने के लिए वन सम्पदा दोहन के अधिकार आपने हाथ में ले लिए। इसी को आगे बढ़ाते हुए टिहरी रियासत ने 1885 में वन बन्दोबस्त शुरू किया और 1927 में रवाई घाटी में भी वन बन्दोबस्त शुरू कर दिया गया। इसमें ग्रामीणों के जंगलों अधिकार खत्म कर दिए। वन सम्पदा के प्रयोग पर कर लगा दिए गए। पारम्परिक त्योहारों पर भी रोक लगा दी गई। एक भैस एक गाय और एक जोड़ी बैल से अधिक पशु रखने पर एक पशु पर एक रूपये साल का कर थोप दिया गया। इसकी वजह से रवाई घाटी के स्थानीय लोगों में रोष बढ़ने लगा। नए वन बन्दोबस्त में वनो पर पशु चराने पर शुल्क, नदियों में मछली मरना भी बन्द करवा दिया। आलू की उपज पर प्रतिमन एक रुपया कर लगा दिया। इस प्रकार के कर जनता के ऊपर थोप दिए गए। इससे जनता में आक्रोश फैल गया। उत्तराखण्ड के इतिहास में तिलाड़ी को याद करने का मतलब है, प्रतिकार की एक सशक्त धारा को याद करना। एक ऐसे समय और व्यक्तियों को भी याद करना जो अपनी थाती को बचाने के लिये लड़ने और सच के साथ खड़े होने की ताकत से भरे हैं। उत्तरकाशी की यमुना घाटी में स्थित बडकोट के पास है तिलाड़ी। टिहरी रियासत ने जनता के हक-हकूकों को छीनने के लिये दमनकारी नीतियों का सहारा लिया था। इसके खिलाफ जनता तिलाड़ी के मैदान में रणनीति बनाने के लिये सभा कर रही थे। लोगों का गुस्सा भी बढ़ रहा था। दमनकारी नीतियों, नौकरशाही, बेगार, प्रभु सेवा, बढ़े हुये करों से भी यह प्रतिकार जुड़ा था। देश में आजादी के आन्दोलन की हलचल का प्रभाव भी इस आन्दोलन में था। रवांई घाटी में रियासती प्रशासन के दमन के खिलाफ हालांकि प्रतिकार के स्वर 1820 से ही शुरू हो गये थे। 1835 में सकलाना तथा रवांई में आंदोलन चला। 1851 में सकलाना की अठूर पट्टी में आन्दोलन हुआ। उस समय गन्तूर, रामसिराई और रंवाई में ढंढक दबाये गये। राजशाही के क्रूर दमन के खिलाफ जनवरी 1887 को ढंढक हुआ। कुजड़ी में 1903 में ढंढक हुई। 1906 में खास पट्टी में ढंढक हुई। 1915 में जंगलाती बंदोबस्त तथा सौण्या सेर एवं बिसाउ प्रथा के खिलाफ कडाकोट, रमोली और सकलाना पट्टियों में हुआ। उसके बाद 1927-28 में नये वन बन्दोबस्त द्वारा जंगलात के अधिकारों को सीमित किया गया। इससे रंवाई प्रतिरोध की पृष्ठभूमि बनी। इस दौर में राजगढ़ी वन आन्दोलन चला। मई 1930 में रंवाई में जिस आन्दोलन की अभिव्यक्ति हुई वह न तो एकएक हुई घटना थी और न सिर्फ वन अधिकारों को सीमित करना ही उसका अकेला कारण था। जंगलात की नई व्यवस्था के अन्तर्विरोधों तथा रवांई की जनता को इसने असन्तोष को अतिरिक्त ऊर्जा दी। खैर, इस पर लम्बी बातचीत होगी। फिलहाल तिलाड़ी के शहीदों पर। 1927-28 में टिहरी राज्य में जो वन व्यवस्था की गई उसमें वनों की सीमा निर्धारित करते समय ग्रामीणों के हितों की जान-बूझ कर अवहेलना की गई, इससे वनों के निकट के ग्रामों में गहरा रोष फैल गया। रवांई परगने में वनों की जो सीमा निर्धारित की गई उसमें ग्रामीणों ने आने-जाने के रास्ते, खलिहान और पशुओं के बांधने के स्थान भी वन सीमा में चले गये। जिससे ग्रामीणों के चरान, चुगान और घास-लकड़ी काटने के अधिकार बन्द हो गये। वन विभाग की ओर से आदेश दिये गये कि सुरक्षित वनों में ग्रामीणों को कोई अधिकार नहीं दिये जा सकते.टिहरी रियासत की वन विभाग की नियमावली के अनुसार राज्य के समस्त वन राजा की व्यक्तिगत सम्पत्ति मानी जाती थी, इसलिये कोई भी व्यक्ति किसी भी वन्य जन्तु को अपने अधिकार के रूप में बिना मूल्य के प्राप्त नहीं कर सकता। यदि राज्य की ओर से किसी वस्तु को नि:शुल्क प्राप्त करने में छूट दी जायेगी तो वह महाराजा की विशेष कृपा पर दी जायेगी। जो सुविधाएं वनों में जनता को दी गई है, उन्हें महाराजा स्वेच्छानुसार जब चाहे रद्द कर सकेंगे। उस समय आज की जैसी सुविधाएं नहीं थी, पशुओं से चारे से लेकर कृषि उपकरणों से लेकर बर्तनों तक के लिये भी लोग जंगलों पर ही आश्रित थे, लेकिन जब जनता शासन तंत्र से पूछती कि जंगल बन्द होने से हमारे पशु कहाँ चरेंगे? तो जबाब आता था कि ढंगार (खाई) में फेंक दो। यह बेपरवाह उत्तर ही वहाँ के लोगों के विद्रोह की चिंगारी बनी। टिहरी रियासत के कठोर वन नियमों से अपने अधिकारों की रक्षा के लिये रवांई के साहसी लोगों ने 'आजाद पंचायत' की स्थापना की और यह घोषणा की गई कि वनों के बीच रहने वली प्रजा का वन सम्पदा के उपभोग का सबसे बड़ा अधिकार है। उन्होंने वनों की नई सीमाओं को मानने से अस्वीकार कर दिया तथा वनों से अपने उपभोग की वस्तुयें जबरन लाने लगे। इस प्रकार से रंवाई तथा जौनपुर में ग्रामीणों का संगठन प्रबल हो गया, आजाद पंचायत की बैठक करने के लिये तिलाड़ी के थापले में चांदाडोखरी नामक स्थान को चुना गया। इस प्रकार वन अधिकारों के लिये आन्दोलन चरम बिन्दु पर 30 मई, 1930 को पहुँचा, तिलाड़ी के मैदान में हजारों की संख्या में स्थानीय जनता विरोध करने के लिये एकत्रित हुई और विरोध का दमन करने के लिये टिहरी रियासत के तत्कालीन दीवान चक्रधर दीवान के नेतृत्व में सेना भी तैयार थी। आजाद पंचायत को मिल रहे जन समर्थन की पुष्टि हजारों लोगों का जनसमूह कर रहा था, इससे बौखलाये रियासत के दीवान ने जनता पर गोली चलाने का हुक्म दिया। जिसमें अनेक लोगों की जानें चली गई और सैकड़ों घायल हो गये। तिलाड़ी गोली काण्ड के 88 वर्ष पूरे हो चुके हैं लेकिन जनता द्वारा प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार के लिये की जा रही माँग को दबाने के उद्देश्य से अंजाम दिये गए इस काण्ड की याद आज भी उत्तराखण्ड के बाशिन्दों के जेहन में ताजा है।

30 मई 1930 को हुए इस गोली कांड में शहीद हुए लोगों का बस इतना कसूर था कि वे तत्कालीन टिहरी के राजा की आज्ञा के बिना ही अपने हक-हकूक के लिये महापंचायत कर रहे थे। प्रदेश की यमुना घाटी में हुआ यह गोली कांड दर्शाता है कि तत्कालीन समय में भी वहाँ की जनता वनों और उन पर अपने अधिकार को लेकर सजग थी। यही वजह है कि यह क्षेत्र आज भी वन सम्पदा से परिपूर्ण है। उत्तरकाशी के बड़कोट नगरपालिका के अन्तर्गत तिलाड़ी यमुना नदी के किनारे बसा का वह स्थान है जहाँ महापंचायत करने के लिये लोग जमा हुए थे।

ज्योतिष की बातें - 130

15 जून 2023 को सूर्य शत्रुराशि वृषभ से निकलकर मित्रग्रह की राशि मिथुन में प्रवेश करेगा। उस पर कोई शुभदृष्टि भी नहीं होगी। इस कारण सूर्य सामान्य फलदायक रहेगा। सूर्य तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ फलदायक होता है इसलिये अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, प्रतिष्ठा सफलता आदि अपने कारक विषयों में मेष, मकर, कन्या व सिंह राशि के जातकों के लिए शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को सामान्य फल समझना चाहिए। 17 जून 2023 को शनि अपनी मूल त्रिकोणराशि कुम्भ में वक्री हो जाएगा और अगले साढ़े चार महीने तक वक्री रहेगा। जिन जातकों के लिए शनि अभी शुभ चल रहा है उनके लिए शनि अत्यधिक शुभ हो जाएगा और जिन जातकों को शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैय्या चल रही है उनके लिए शनि अगले साढ़े चार महीने तक अधिक कष्टदायक रहेगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 21

शराबबन्दी अर्थात शराब महंगी

जहाँ-जहाँ शराबबन्दी की जाती है वहाँ-वहाँ शराब की खपत पहले से अधिक बढ़ जाती है, साथ ही शराब अत्यधिक महंगी भी हो जाती है। कई देशों में शराबबन्दी की गई, प्रतिबन्ध लगाए गए लेकिन शराबबन्दी को असफल देख कुछ समय बाद प्रतिबन्ध हटा लिए गए।

व्यक्ति की कोई लत लग जाती है तो उसको पूरा करने के लिए व्यक्ति कोई भी काम करने को तैयार हो जाता है। शराबबन्दी होने पर जब आदमी को शराब बहुत दिन नहीं मिलती है तो वह कहीं से भी, कैसे भी, किसी भी कीमत पर शराब लेने को तैयार हो जाता है। शराब अच्छी हो, खराब हो, हानिकारक हो, जैसी भी हो, वह लत के कारण कुछ भी कीमत देने को तैयार हो जाता है। फिर चोरी-चोरी स्थानीय स्तर पर निर्मित शराब से बहुत सी मृत्यु भी हो जाती हैं। शराब उपलब्ध न होने पर लती व्यक्ति नशे के अन्य साधन अपनाता है, ड्रग्स लेना प्रारम्भ करता है, नशे के इंजेक्शन लेना प्रारम्भ करता है जो कि शराब से भी अधिक घातक होते हैं। जब शराब सुलभ नहीं होती है तो उसको उपलब्ध कराने के लिए माफिया तैयार हो जाते हैं और बहुत महंगी कीमत पर गुप्त रूप से लती लोगों को शराब उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार प्रतिबन्ध का प्रभाव यह होता है कि शराब अत्यधिक महंगी हो जाती है बल्कि बन्द नहीं होती। इस प्रकार लोगों की आर्थिक हानि होती है और स्वास्थ्य की भी हानि, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो जाती है। किसी भी लत को छुड़ाने के लिए कठोरता करने से कोई लाभ नहीं होता है बल्कि उसके हानि लाभ बताकर समझाने से कुछ प्रभाव पड़ सकता है। हर जगह दमन आवश्यक नहीं होता है शमन से भी सुधार होता है।

-सरल

जोहार क्लब के खेलोत्सव में रोचक मुकाबले

मुनस्यारी। जोहार क्लब द्वारा आयोजित खेलोत्सव की बहार बनी हुई है। पहली जून से शुरु हुए ग्रीष्मकालीन खेल में जोहार क्लब का यह 68वां वार्षिक आयोजन है। खेलोत्सव का उद्घाटन विधायक हरीश धामी ने करते हुए कहा कि जोहार क्लब का विकास मिनी स्टेडियम की तर्ज पर किया जायेगा।

उद्घाटन के फुटबाल मुकाबले में मुनस्यारी पब्लिक स्कूल ने विवेकान्द से तीन गोल से मैच जीता। अण्डर-14 बालिका वर्ग फुटबाल के रोमांचक मुकाबले निरन्तर देखने को मिले। मुख्य निर्णायक कैलाश लस्पाल और सहायक निर्णायक गौरव राणा, लवराज कुमार थे। संचालन लक्ष्मण पांगती का रहा। चल रही प्रतियोगिता में लगातार रोचक खेल देखने को मिल रहा है। अतिथि के रूप में महेश धर्मशक्तू, लक्ष्मणसिंह धर्मशक्तू, प्रताप सिंह रावत, ब्लाक प्रमुख भावना देवी, उपस्थित थे। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य हितेश जोशी, गगन पांगती, मुन्ना सयाना, डॉ. राजू मर्तोलिया, डॉ. नारायण सिंह पांगती, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, खुशाल धर्मशक्तू आदि मौजूद थे।

दारमा संघर्ष समिति टीएचडीसी पर गरजी

धारचूला। दारमा संघर्ष समिति प्रस्तावित डैम बोकांग बालिंग के सर्वेक्षण कार्य स्थल ढाकर में प्रदर्शन करते हुए टीएचडीसी पर गरजी। ग्रामीणों ने कहा कि चार माह बाद भी शासन-प्रशासन की ओर से कोई सन्तोषजनक कार्यवाही नहीं की गई है। उच्च हिमालयी क्षेत्र में माइग्रेशन में जाने के बाद दारमा संघर्ष समिति के आह्वान पर तमाम ग्रामीण ढाकर में जुटे और धरना प्रदर्शन करते हुए टीएच डीसी वापस जाओ के नारे लगाए। समिति के अध्यक्ष पूरन सिंह ग्वाल ने कहा कि सर्वेक्षण कम्पनी ग्रामीणों की नाप भूमि में बिना सहमति के आपना कैम्प लगाए हुए है। यदि अब शीघ्र ये नहीं हटे तो धारचूला तहसील पर अनशन शुरु किया जायेगा। प्रदर्शनकारियों में संरक्षण नारायण दरियाल सहित लोग थे।

पहलवानों के समर्थन में पहाड़

महिला पहलवानों के समर्थन में पहाड़ भी है। उत्तराखण्ड में जगह-जगह पहलवानों पक्ष में खिलाड़ी व अन्य लोगों ने आवाज उठाई है। कांग्रेस ने तो इसे बड़ा आन्दोलन बनाते हुए सरकार को घेरा है। विपक्ष द्वारा सरकार से सवाल किये जा रहे हैं कि बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओं के नारे को सार्थक करने के बजाए आरोपी सांसद को बचाया जा रहा है। इसमें सरकार को जबाब देना होगा।

उत्तराखण्ड के सभी 13 जिलों में हुए प्रदर्शन में प्रदर्शनकारियों ने कहा कि देश के तिरंगे को अपने शौर्य से सम्मान दिलाने वाले भारतीय महिला कुश्ती पहलवानों का कुश्ती संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व यूपी के गोडा से भाजपा सांसद बृजभूषण शरण की ओर से यौन शोषण और उत्पीड़न की घटना अत्यन्त निन्दनीय है। खेल संगठनों द्वारा भी महिला पहलवानों के समर्थन में धरने-प्रदर्शन किये गये हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चम्पावत हेरिटेज सिटी के रूप में विकसित होगा

चम्पावत। चम्पावत को हेरिटेज सिटी के रूप में विकसित करने की तैयारी है। इसके लिए राजबुंगा किला, मानेश्वर व अन्य अन्य स्थलों का चयन किया गया है। इन स्थानों पर तमाम बुनियादी सुविधाएं जुटाई जाएंगी। इसके लिए डस्टिनेशन मैनेजमेंट कमेटी का गठन किया जाएगा। हेरिटेज सिटी बनने से पर्यटक गतिविधयां बढ़ेंगी।

बताया जा रहा है कि स्वदेश दर्शन के तहत हेरिटेज सिटी बनाए जाने का प्रस्ताव है। योजना के तहत चम्पावत के राजबुंगा किले को पर्यटन स्थल के रूप में बदल जायेगा, इसके लिये डीपीआर बनाई जा रही है। इसके तहत किले में संग्राहलय की स्थापना, लाइट एण्ड साउण्ड कैफेट एरिया व इससे लगे नागनाथ मन्दिर परिसर का सौन्दर्यीकरण कार्य किया जायेगा।

पर्यटन अधिकारी अरविन्द गौड़ ने बताया है कि चम्पावत को हेरिटेज सिटी बनाने की कार्य योजना बनाई जा रही है। इससे पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। बताया गा है कि एकहथिया नौला व चण्डालकोट को जोड़ते हुए हेरिटेज ट्रेल विकसित करने की योजना है। द्यूरी गाँव में राजस्व भूमि पर ईको रिसार्ट प्रस्तावित किये जा रहे हैं।

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

सबका साथ सबका विकास। अपने शहर टनकपुर को प्रगति के पथ पर ले जाने के संकल्प के साथ

विपिन कुमार

अध्यक्ष

नगर पालिका परिषद टनकपुर (चम्पावत)

परिक्रमा

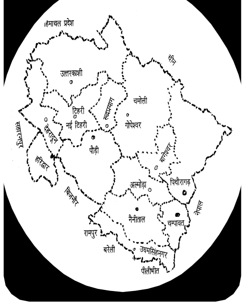

भाजपा का विधान सभा सम्मेलन

रानीखेत। भाजपा का विधानसभा सम्मेलन में नेता-कार्यकर्ता जुटे। ताड़ीखेत में हुए आयोजन में विधायक प्रमोद नैनवाल ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिये जुटने का आह्वान किया। पूर्व दर्जा मंत्री गजराज बिष्ट को संगठन के स्थानीय नेताओं ने अपनी तैयारी के बारे में बताया।

अल्मोड़ा में नहीं खुल सका फट स्टोर

अल्मोड़ा। जनपद में फल और सब्जियों का उत्पादन देखते हुए फल स्टोर खोले जाने का सर्वे हुआ था लेकिन आज तक फल स्टोर न खुलने से फल-सब्जी उत्पादन की दिशा में बहुत से उपयोगी कार्य नहीं हो पा रहे हैं। काश्तकारों ने फल स्टोर खोलने की मांग की है ताकि फल-सब्जियों के कारोबार का लाभ मिल सके।

पुर्ब्याल देवता की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा

मुनस्यारी। सेला गाँव स्थित पुर्ब्याल मन्दिर में मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा समाारोह सम्पन्न हुआ। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पं.उषापति द्विवेदी ने प्राणप्रतिष्ठा की की। यजमान वीरेन्द्र सिंह दास्पा, चन्द्र सिंह, मंगल सिंह, केदार सिंह, लक्ष्मण सिंह, कुन्ती देवी पांगती, देवकी मर्तोलिया, नारायणी धर्मशक्तु, मोहनी रावत सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

मेला अवधि बढ़ाने की मांग

टनकपुर। उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध पूर्णागिरी मेले को बढ़ाने की मांग को लेकर मन्दिर समिति ने प्रशासन को पत्र लिखा है। तय तिथि के अनुसार सरकारी मेला 9 जून को पूरा हो चुका था लेकिन श्रद्धालुओं का आना जारी है। ऐसे में सरकार की ओर से भी इसे बढ़ाने की मांग की गई। मन्दिर समिति की मांग को देखते हुए जिलाधिकारी ने मेला अवधि 15 जून तक की है।

जागेश्वर धाम संवारने की तैयारी

अल्मोड़ा। विश्व प्रसिद्ध जागेश्वर धाम के विस्तार व संवारने की तैयारी है। इसके लिये भू-वैज्ञानिकों ने मिट्टी के नमूने लेकर रुद्रपुर लैब में भेजे हैं। इस धाम के लिये मास्टर प्लान को मंजूरी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सरयू नदी पर स्पान पुल के लिये बजट

गंगोलीहाट। बनकोट और बागेश्वर के बीच आवागमन के लिये सरयू नदी पर 105 मीटर लम्बे स्पान पुल के लिये बजट जारी होने की खुशी है। इस पुल के बन जाने से बनकोट और बागेश्वर के बीच मात्र 20 किमी की दूरी रह जायेगी, अभी तक यह दूरी 95 किमी है।

पुल निर्माण के लिये शासन से 15. 24 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए हैं। बताते चलें कि बनकोट से बागेश्वर के लिये पहले ही सड़क कट चुकी थी लेकिन सरयू नदी पर पुल न होने से यातायात शुरु नहीं हो सकता है। क्षेत्रवासी पुल के लिये मांग कर रहे थे। पूर्व विधायक मीना गंगोला ने भ इसके लिये प्रयास किये थे। अब शासन की ओर से धन राशि स्वीकृत होने से बनकोट वासियों में विशेष खुशी है। इस दूरस्थ क्षेत्र से रविन्द्र बनकोटी, सूरज बनकोटी, अभिनेष बनकोटी ने शासन का आभार किया है।

राष्ट्रपति से मिली जोहार समिति

दिल्ली/बागेश्वर। जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति के लोग दिल्ली जाकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिले। उन्हें अपनी संस्कृति विरासत के बारे में बताया। उन्होंने जड़ी बूटी, हस्तशिल्प और हथकरघा के विपणन के लिए बागेश्वर स्थिति भोटिया पड़ाव बनखोला भवन और उसकी भूमि को उनके नाम हस्तान्तरित करने की मांग की है। समिति के मुख्य संरक्षक गंगा सिंह पांगती के नेतृत्व में समिति के लोग दिल्ली में राष्ट्रपति से मिले। उन्हें अपनी समस्या का एक ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि उनकी समिति पंजीकृत है।

समिति ने कहा कि उत्तराखण्ड सीमान्त क्षेत्र में निवास करने वाले भोटिया जनजाति के लोग आदिकाल से तिब्बत व्यापार व कुटीर उद्योग से अपनी आजीविका चलाते हैं। तिब्बत व्यापार व कुटीर उद्योग के लिए उन्हें अंग्रेजों ने बागेश्वर, हल्द्वानी, रामनगर आदि स्थानों पर भोटिया पड़ाव के नाम से भूमि आवंटित की थी। 19वीं सदी से ही हम इन पड़ावों में पट्टेदार की तरह कब्जेदार हैं। एटकिंसन के गजेटियर में इसकी पुष्टि की जा सकती है लेकिन सरकार ने इन स्थानों पर कब्जा कर लिया है। उन्होंने जड़ी बूटी, हस्तशिल्प तथा हथकरघा के विपणन के लिए बनखोला भवन बागेश्वर व भूमि को जोहार सांस्कृतिक के नाम करने की मांग की है। राष्ट्रपति से परम्परागत वेशभूषा में संरक्षक गंगा सिंह पांगती के अलावा पूजा जंगपांगी, गीतिका मर्तोलिया, गीतिका टोलिया, बसन्ती टोलिया ने भेंट की।

दिगरामुवानी के क्षे.पं. सदस्य का इस्तीफा

पिथौरागढ़। दिगरा मुवानी के क्षेत्र पंचायत सदस्य कमलदीप सिंह बिष्ट ने उपेक्षा का आरोप लगाते हुए पद से इस्तीफा दिया है। जिलाधिकारी को सौंपे त्यागपत्र में जिला पंचायत सदस्य कमलदीप ने कहा कि कनालीछीना विकासखण्ड की दिगरा मुवानी क्षेत्र पंचायत सदस्य सीट से वह सदस्य चुने गए। उनके कार्यकाल को चार वर्ष का समय पूरा होने को है। विपक्षी दल से होने के कारण उन्हें विकास कार्यों से दूर रखा गया है। कहा कि विकासखण्ड में होने वाली बैठकों के साथ्ज्ञ ही लिखित और मौखिक तौर पर ब्लाक प्रमुख को मांग पत्र दिया गया। इसके बावजूद उनकी मांगों को अनदेखा किया गया। ऐसे में वह क्षेत्र के विकास में सदस्य को मिलने वाली विकास निधि में से एक भी रुपये का विकास कार्य नहीं करा पाए हैं। उनका आरोप है कि राजनीतिक दुराग्रह के कारण भेदभाव है।

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं-

एन.एस.टोलिया

(अधीक्षण अभियन्ता यूपीसीएल)
चौपला चौराहा, वीरपारो मार्ग
गैरबैशाली, बिठौरिया नं.१
पो. हरिपुर नायक
हल्द्वानी

बी.एस. टोलिया

(पूर्व डीआईजी)
चौपला चौराहा, वीरपारो मार्ग
गैरबैशाली, बिठौरिया नं.१
पो. हरिपुर नायक
हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
15 मई- ज्येष्ठ आरम्भ
15 मई- अपरा एकादशी व्रत
19 मई- वटसावित्री व्रत
19 मई- अमावस्या

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती

फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)